Artistic Narration, Vol. IX, 2018, No. 1: ISSN (P) : 0976-7444 (e) : 2395-7247Impact Factor 3.9651 (ICRJIFR)
UGC Approved Journal No. 43285

टेराकोटा शिल्प
(वर्तमान बाजार के परिदृश्य मेंः समस्याएं एवं सुझाव)

डॉ0 रतन कुमार
ललित कला विभाग, ललित कला संकाय
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ0 रतन कुमार,

टेराकोटा शिल्प
(वर्तमान बाजार के परिदृश्य मेंः समस्याएं एवं सुझाव)

Artistic Narration 2018, Vol. IX, No.1, pp.21-25

https://anubooks.com/journal-volume/-artistic-narration-no-ix-no-1-2018-special-april-issue

सारांश

अमूर्त्त/सारांष यह षोध पत्र भारत में टेराकोटा षिल्प मृणमूर्तियों के महत्व एवं षिल्प कला के समृद्ध इतिहास पर प्रकाष डालता है तथा इसकी उत्पत्ति सिन्धु घाटी सभ्यता से प्रारम्भ होने का साक्ष्य प्रस्तुत करता है। षोध पत्र में कलात्मक अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व के माध्यम के रूप में टेराकोटा के महत्व पर प्रकाष डालता है। वस्तुतः लेख के ऐतिहासिक महत्व के बावजूद षोध पत्र में तर्क दिया गया है कि विभिन्न कारकों के कारण टेराकोटा षिल्प कला में वर्तमान में काफी गिरावट आ गयी है। षोध पत्र के माध्यम से टेराकोटा षिल्प के विभिन्न मुद्दों में कारीगरों के सामने आने वाली आर्थिक चुनौतियां, आधुनिक बुनियादी ढांचे की कमी और प्लास्टिक तथा अन्य सिंथेटिक सामग्रियों की बढ़ती लोकप्रियता षामिल है। इस षोध पत्र के माध्यम से षिल्पकारों एवं कारीगरों के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करके और उनके काम को बढ़ावा देकर हम इस महत्वपूर्ण सांस्कृतिक विरासत को पुनर्जीवित करने में मदद कर सकते हैं। साथ ही कारीगरों द्वारा सामना की जाने वाली आर्थिक कठिनाइयों, बाजार के अवसरों की कमी और सस्ते बड़े पैमाने पर उत्पादित विकल्पों से प्रतिस्पर्धा पर प्रकाष डाला गया है। इस लुप्त होती कला को पुनर्जीवित करने के लिए सरकारी तथा गैर सरकारी सहायता के साथ ही कौषल विकास के माध्यम एवं विभिन्न रणनीतियों के प्रस्ताव पर जोर देता है। इस चुनौतियों का समाधान करके और टेराकोटा के सौन्दर्य और सांस्कृतिक मूल्य को बढ़ावा देकर हम इस समृद्ध परम्परा की निरन्तरता को सुनिष्चित कर सकते हैं। इससे कारीगरों को सहायता के प्रोत्साहन भी प्राप्त होगा तथा टेराकोटा षिल्प कला के विस्तार का अस्तित्व सदा के लिए सुनिष्चित होगा।

भारतीय कला और जन संस्कषति के इतिहास में मष्मय मूर्तियों एवं पात्रों का अपना खास स्थान है। पत्थर में मूर्ति गढ़ने से बहुत पहले ही मनुश्य ने मिट्टी के पात्र गढ़े उन पर अलंकरण बनाए तथा अपनी मूर्त और अमूर्त भावना को मिट्टी के माध्यम से साकार रूप दिया। इतिहास के आदिम–काल में मूर्तियों, पात्र और खिलौने हाथों से बने होते थे। पर जैसे–2 सभ्यता आगे बढ़ी, तब मिट्टी के मूर्तियों और बर्तनों की ओर अधिक ध्यान दिया जाने लगा। मिट्टी का माध्यम इसलिए भी लोकप्रिय रहा है कि इससे वस्तुओं को डौलिया करने में अधिक परिश्रम की आवष्यकता नहीं थी। मष्मय मूर्तियों व पात्रों के अध्ययन से न केवल कला पक्ष पर प्रकाष पड़ता है, बल्कि भारतीय धर्म, समाज, लोक विष्वास, वेषभूशा, खेलकूद आदि पर भी प्रकाष पड़ता है। मिट्टी की बनी मूर्तियां व पात्र अधिकतर आकार में छोटे होते हैं। अतः इनको सरलता से इधर–उधर ले जाना, घरों में सजाना, दीवार आदि पर लटकाना सरल था। मष्णकला के सबसे प्राचीनतम उदाहरण– हड़प्पा संस्कषति के केन्द्र मोहनजोदड़ों से प्राप्त हुए हैं। इस समय यह स्थान पाकिस्तान की सीमा में है। मोहनजोदड़ों से प्राप्त अनेक स्त्री–पुरूशों की मूर्तियां, आकषतियाँ, खिलौने तथा नाना प्रकार के सादे व अलंकरित मष्णपात्र प्राप्त हुए हैं, जो कि आज देष के विभिन्न संग्रहालयों में राश्ट्रीय धरोहर के तौर पर संकलित है।

सभ्यता के परिवर्तित चक्र में हमारी बहुत सी कलाएं लुप्तप्रायः हो गयी हैं। मष्ण्यमय मूर्तियों, खिलौनों तथा बर्तनों का स्थान अब प्लास्टर ऑफ पेरिस तथा प्लास्टिक ने ले लिया है। परन्तु आज भी दीपावली तथा अन्य कुछ अवसरों पर अवष्य ही मिट्टी के खिलौने तथा पात्र बनाये जाते हैं। दुनिया के अन्य देषों के मुकाबले भारत में लगभग सभी राज्यों का कुछ न कुछ हस्तषिल्प प्रसिद्ध है, उन्हीं हस्तषिल्पों में टेराकोटा एक है।

प्राचीनतम समय से आज तक इस षिल्प के बनाने का माध्यम तथा तकनीक भी लगभग वही चली आ रही है। आज के आधुनिक परिवेष के बावजूद भी भारत के लगभग सभी राज्यों में परम्परागत कुम्हार आज भी उसी प्राचीनतम विधि का प्रयोग, षिल्प निर्माण में जैसे बनाने का विधि में साँचे द्वारा, स्लैब द्वारा, चाक द्वारा, हाथ द्वारा विधि का ज्यादातर प्रयोग करते हैं तथा पात्रों व खिलौनों आदि को पकाने के लिए परम्परागत ''आवाँ'' का प्रयोग करते हैं।

भारत में अन्य षिल्प की अपेक्षा टेराकोटा षिल्प को अपेक्षाकष्त वह स्थान नहीं मिल सका है। आज की स्थिति में यह षिल्प धीरे–धीरे मष्तप्रायः हो रहा है।

टेराकोटा षिल्प से जुड़े षिल्पकारों की समस्याएं

1. टेराकोटा षिल्प से जुड़े षिल्पकार आर्थिक रूप से कमजोर हैं और आधुनिक संसाधनों की व्यवस्था करने में अस्मर्थ। परिणामतः वैष्वीकरण एवं प्रतिस्पधात्मिक बाजार में नयी तकनीक पर आधारित गुणवत्तापूर्ण उत्पाद देने में असफल है।
2. षिल्पकारों को अपने उत्पाद की बिक्री के लिए स्थानीय स्तर पर स्वतन्त्र वर्कषेड, षोरूम एवं दुकानें भी नहीं है। अधिकांष षिल्पकार अपने आवास को ही वर्कषेड बना रखे हैं और बिक्री के लिए बाहरी मेले एवं प्रदर्षनियों पर निर्भर हैं।
3. आगामी दिनों में षहरीकरण विस्तार के परिणामस्वरूप टेराकोटा उत्पाद के प्रयुक्त होने वाला मुख्य कच्चा माल मिट्टी भी जो स्थानीय स्तर पर उपलब्ध होता था वह भी खतरे में है।
4. समाज सेवी संस्थाओं एवं सरकार द्वारा सर्वेक्षण कर उनकी समस्याओं का आंकलन तो अवष्य किया है, परन्तु किसी ने भी समस्या निराकरण की दिषा में कोई भी प्रभावी कदम अब तक नहीं उठाया है।

टेराकोटा षिल्पकार सहानुभूति एवं अनुदान का आकांक्षी नहीं है। उसे आधारभूत सुविधायें उपलब्ध होनी चाहिए, जिससे टेराकोटा उद्योग को विकासोन्मुख गौरव प्राप्त हो।

निराकरण एवं सुझाव

1. टेराकोटा षिल्पकारों को आपसी नकारात्मक प्रतिस्पर्धा से हटकर आपसी विष्वास व कार्य प्रणाली वाली मनोवषत्तियों का विकास करना होगा, जिससे सभी षिल्पकार लाभान्वित होंगे।
2. देष के सभी राज्य सरकारों एवं वित्त संस्थाओं से अपेक्षा है, कि टेराकोटा षिल्प कला के विकास में सहायक आधुनिक तकनीक, मषीनें मुहैया करायें जिससे गुणवत्तापूर्ण उत्पादन हो सके और आध ुनिकीकरण में लगने वाली पूंजी को अनुदान रूप में उपलब्ध करायें। हस्तकला को पुनर्जीवित करने की दिषा में प्रभावी एवं सकारात्मक प्रयास आवष्यक हैं।
3. टेराकोटा षिल्पकार आर्थिक रूप से अपने उत्पाद के स्थानीय बिक्री एवं प्रदर्षन के लिए दुकानें व षोरूम निर्माण में सक्षम नहीं हैं। अतः स्थानीय निकायों अथवा राज्य सरकारों को सुविधादाता के रूप में सामने आना होगा।
4. भारत सरकार द्वारा कामन फैसलिटी सेन्टर के रूप में चालू कराया जाये।
5. विभिन्न राज्यों में ग्राम पंचायत की खाली पड़ी जमीन में षिल्पहाट बनाकर षिल्पकारों को आवंटित कराया जाय।
6. टेराकोटा उत्पाद के कच्चा माल (मिट्टी) उपलब्धता सुनिष्चित कराने के लिए टेराकोटा हस्तषिल्पियो को पट्टे पर जमीन आवंटित किया जाय।
7. टेराकोटा षिल्प से भरपूर संभावनाओं को देखते हुए ऐसी कार्य योजना बनाई जाय जो इस क्षेत्र के औद्योगिक विकास में सहायक हो।
8. स्थानीय बैंक षाखाओं से सकारात्मक सहयोगी भूमिका की अपेक्षा की जाती है।

मार्केटिंग हेतु सुझाव

1. षिल्पकारों को अपने उत्पादों को बेचने के लिए मार्केटिंग के लिए कुछ समूह बनाकर बाजार का सर्वेक्षण कर मार्केटिंग करने की आवष्यकता है।
2. हमेषा अपने उत्पाद को नवीन बनाये रखने व बाजार में बने रहने के लिए राश्ट्रीय एवं अन्तर्राश्ट्रीय स्तर के डिजाइन का हमेषा बदलाव करते रहना चाहिए।
3. अपने कार्यों में हमेषा बदलाव का सम्भावना बनाये रखना चाहिए।
4. अपने उत्पादों को आधुनिक बनाये रखने के लिए प्रोफेषनल डिजाइनरों की सहायता लेनी चाहिए।
5. जिले स्तर पर हस्तषिल्प व्यापार संघ बनाकर अपने उत्पादों को बाजार में बेचने चाहिए।
6. जिले स्तर पर उत्पादों का रजिस्ट्रेषन कराने चाहिए।

7. विकास आयुक्त हस्तषिल्प द्वारा निरन्तर षिल्पों के उत्पादों का व्यापक प्रचार एवं प्रसार राज्य एवं केन्द्र स्तर पर करते रहने की आवष्यकता है।
8. अन्य जगहों से आपसी आदान–प्रदान के माध्यम से उत्पाद व डिजाइन आदि की बिक्री हेतु प्रदर्षनी लगाया जाना चाहिए।
9. षिल्पकारों को समय–समय पर चलचित्र (कार्य सम्बन्धित फिल्म) भी समूहों में दिखाये जाना चाहिए।
10. षिल्पकारों को अच्छी पैकिंग कर अपने उत्पाद को और आकर्शक बनाने के लिए विकास आयुक्त हस्तषिल्प द्वारा पैकिंग मैनेजमेन्ट द्वारा समय–समय पर पैकिंग के कोर्स चलाये जाना चाहिए।
11. टेराकोटा षिल्प को राश्ट्रीय व अन्तर्राश्ट्रीय बाजार में स्थान दिलाने के लिए राश्ट्रीय व अन्तर्राश्ट्रीय कम्पनियों को सामने आना चाहिए जैसे– सहारा, रिलायन्स, बिरला, टाटा आदि जो अपने स्रोतों से राश्ट्रीय व अन्तर्राश्ट्रीय बाजार में उचित स्थान दिला सकते हैं।

सन्दर्भ

1. Pottery- Materials and Techniques -David green - 1967
2. Art and Crafts of India- Nicholas Barnard - 1993
3. Indian Terracotta Art- A. Goswami - 1959
4. Pottery in the making - Dora Lunn- 1954
5. Sculpture Ceramics - Gregory lan